*i*Journals: International Journal of Social Relevance &Concern (IJSRC)
ISSN-2347-9698
Volume 8 Issue 12 December 2020

जनसंचार में गुणवत्ता नियंत्रण

डॉ. पी. राजरत्नम

एसोसिएट प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष
हिंदी विभाग, तमिलनाडु केंद्रीय विश्वविद्यालय
तिरुवारूर- 610005
मोबाइल नंबर : - 9486067330
ई मेल –rajaretnampdkt@gmail.com

जनसंचार में गुणवत्ता नियंत्रण- भलाई और ज्ञान दोनों किसी भी देश से हो, कोई भी दिखाये, उन्हें अपनाकर जियें तो जीवन निश्चिन्त होगीI_ _ _ महाकवि सुब्रहण्य भारती I

जनसंचार- जनसंचार तथा जनमा ध्यम शब्द संचार , माध्यम तथा जन से जुड़कर बने है , ये शब्द 'मास कम्युनिकेशन' और 'मास मिडिया' के रूप में प्रचलित जनसंचार तथा जनमाध्यम है I ब्लूमर ने जन के समतुल्य शब्दालियों जैसे समूह, भीड़ तथा जनसमुदाय के विविध रूपों का प्रयोग कियाI डॉ. मेहता के अनुसार विचारों के आदान- प्रदान की प्रक्रिया जनसंचार कहलाती है I जब संचार की प्रक्रिया बड़े पैमाने पर होती है तो वह जनसंचार कहलाता हैI डॉ. अर्जुन तिवारी के अनुसार जन - जन तक व्यापक रूप में भावों के आदान - प्रदान करने की प्रक्रिया हीजनसंचार हैI

आधुनिक जनजीवन और सांस्कृतिक , आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक एवं शिक्षा व्यवस्था का ताना - बाना जनसंचार साधनों द्वारा व्यवस्थित हैI वे ही जनता समाज तथा राष्ट्र के सजग प्रहरी हैI राष्ट्र की प्रगति, सभ्यता और संस्कृति के विकास का माध्यम हैI शिक्षा का प्रचार प्रसार, जन जागरण तथा संचार साधनों की उपलब्धता मानव को सक्षम बनाकर अधिक से अधिक जानकारी प्रदान करना है , और हर विषय की गहराई तक पहुं चना पत्रकारिता का धर्म होना चाहिएI

मशीनीकरण, विज्ञानपरक, कंप्यूटर, ईमेल, इंटरनेट, व्हाट्स एप्प, आदि से भलाई ज्यादा है फिर भी मानव मूल्य कुछ अंश तक बिगड़ती भी है I आदर्शहीन, नीरस, वैमनस्यता, एकता एवं राष्ट्रीयता अभाव , व्यक्ति -व्यक्ति से भेद, देश भेद, रंग- बिरंगे चेहरे, नैतिक मूल्य का हास आदि भी नजर आते है I भाषा के प्रति अरुचि, अतीत की गरिमा का भूलना, बलिदानी भावना का आभाव, आक्रमणों से देश की रक्षा का परवाह न करना, सांप्रदायिक भेद समर्पित, सेवाभावना का अभाव आदि से जनता को सही रास्ता दिखाकर बहा र लाने में पत्रकारिता में गुणवत्ता नियंत्रण एक सीढ़ी है I गुणवत्ता नियंत्रण दरअसल किसी भी क्षेत्र में किसी भी सिस्टम को विकसित करने के लिए किया जाता है, कभी असफलता परिक्षण संपूर्ण उपभोक्ता उत्पाद पर प्रदर्श के लिए एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया हैI उत्पाद को यह परिचालन ऑपरेशन तब तक चलता है, जब तक की यह विफल नहीं हो जाता I यहI तक की भारी दबाओ जैसे की कम्पन , तापमान और आद्रता के बढ़ाने पर भी जारी रहता है यह उत्पाद की कई

iJournals

अप्रत्याशित कमजोरियों को उजागर कर देता है श्रव्य संचार और दृश्य संचार आदि को जनसंचार में व्यापक महत्व है कहा जाता है शिक्षा ने विज्ञान को जन्म दिया है , और विज्ञान ने जनसंचार साधनों को इसप्रकार शिक्षा शिक्षक शिक्षार्थी एवं जनसंचार संचार युग की अपरिहार्यता है संचार प्रक्रिया अज्ञानता गरीबी को हटाकर सामाजिक ढांचे को सुदृढ़ बनाने की सामर्थ्य का नीव डालकर सब को प्रभावित कर सकता है मानव संसाधनों का विकास आर्थिक शिक्षा व्यव साईकरण सामुदायिक विकास तथा प्रौढ़ एवं अनोपचारिक क्षेत्रों जनसंचार आधुनिकीकरण लाकर अत्यंत उपयोगी सिद्ध होना है शैक्षिक योजना एवं प्रशासन में अभिवृद्धि शिक्षण संस्थाओं में जनसंचार सम्बन्धी सभी साध नों का उप्लाब्धिकरण की आवश्यकता है सुविधाएं जैसी माकन कंप्यूटर प्रयोगशाला शिक्षण संस्थानों में बिजली की सुविधा विशेषकर वाई फाई स्काइप ग्रंथालयो में जनसंचार से सम्बंधित किताबे इ ग्रंथालय और ढंग से विद्यार्थियों शोधार्थियों को विषय को अवगत करानेवाले विद्वानों की आवश्यकता भी शैक्षिक योजना और प्रशाशन संचार साधनों की उत्पत्ति शिक्षा सामग्री के प्रसारण अध्यापको के कक्षा में मार्गदर्शन विशेषकर शोध सम्बंधित कार्यों में विद्यार्थियों की अनुक्रिया तथा उनका मूल्याङ्कन कार्यों में कुशलता बढ़ाने की दिशा में जनसंचार को मोड़कर जनता तक पहुंचाने का कार्य खासकर शिक्षकों में निहि होता है खैर यह रहा जनसंचार के शिक्षण में गुणवत्ता नियंत्रण आजकल न्यूज़ चैनलों पर खबरों के मुकाबले सं सनी खबर न ज्यादा जगह ले ली चैनेलो की बहसों में चिकना चिल्लाना ज्यादा बढ़ गया है हाल में तमिलनाडु की दो तीन घटनाएँ और बैंगलोर की हुई घटनाएं इसकी साक्षी है इसप्रकार किसी एक सारहीन गंभीर घटना को लेकर बहुत दिन तक विचार विमर्श चलते रहने से ख़ास या प्रमुख खबरे दबके रह जाती है लेकिन भारत की सभी भाषाओं की पत्रकारिता काफी हद तक अग्रसर है एवं अपना विस्तार कर रही है अपनी भाषा की बढ़ोत्तरी की ओर चलना है कही कही अखबार की मुकाबले में न्यूज़ चैनल कमजोर पड़ गए है बस इस पर गुणवत्ता को नियंत्रण की जरूरी है ज्यादातर पैकेज या स्टूडियो की बहस में व्यस्त हो गए है जिससे महत्वपूर्ण खबरे छूटती है समाचार पत्रमैगज़ीन टीवी चैनल आदि अधिकत र विज्ञापन पर निर्भर हनी के नाते वह पर धर्म निति को बनाये रखना मुश्किल सी लग रही है चैनलों का ज्यादा ब्रेकिंग न्यूज़ ओर सं सनी से भरी खबरों पर ही रहने लगा है सही बताए तो गुणवत्ता अत्यंत आवश्यक पड़ता है आजकल खेलकूद इतना प्रबल होने का एक कारण जनसंचार ही है

मगर कही कही न्यूज़ चैनलों पर सामाजिक , आर्थिक, खेलकूद, राष्ट्रीय, अंतर्राष्ट्रीय खबरों का अभाव है , ग्रामीण क्षेत्र, जमीन लोक व्यव्यस्था लाना है, क्षेत्रीय खबरों की जगह चका चोंध ओर सन सनी ने ले लिया है , संपादकीय पेज या ऐड पेज हो अच्छे अच्छे प्रासंगिक लेख च पटे थे अच्छे ओर मौलिक विचारों से भरे उन लेखों में न सिर्फ अच्छी जा नकारिया मिलती , है बल्कि पाठको के लिए लेख एक प्रकार से वैचारिक खुराक भी होते है दूसरी तरफ न्यूज़ चैनलों में इस चीज़ का अभाव बना रहता है सोशल मिडिया ने पूरे मीडिया पर एक नए तरह का असर डाला है स नसनी बनाना तथ्यहीन बातों का फैलाना गंभीर मुद्दों पर भी आलोचना करना छोटे बयानों को बड़ी खबर की ओर मोड़ देना आदि ये सब सोशल मीडिया कर रहा है पत्रकारिता के लिए ये सब चुन्नौती की तरह है जनसंचार में तथ्य को कभी भी किसी भी हालत में छुपाना नहीं चाहिए हम सबको ज्ञात है उक्त मामले में

iJournals

किसी किसी चैनल या समाचार पत्र क्या काम कर रहा है सोशल मीडिया में अधिकतर मामलों में जमीनी हकीकत गायब होती है बस इसमे सुधर लाना अनिवार्य है अख़बार या चैनल केवल राजनितिक सनसनी की दिशा मेंआगेय बढ़ते है तो वे अपने पाठकों के साथ अन्याय कर रहे है कोई भी पत्रकार को चाहिए की जमीन से जुडी रहना है I

कही-कहीं समाचार पत्र की कागज एकदम हल्की और गुणवत्ताविहीन रहता हैं, तब हमारा मन उससे पढ़ने में नहीं लगता हैंI इसी प्रकार मुद्रण की व्यवस्था भी कभीकभी आकर्षक विहीन रहता हैंI पत्रकारिता में कोई पत्र या पत्रिका का समय पर मिलना अत्यंत आवश्यक हैंI

सुनने, नोट करने, भाषा एवं व्याकरण सम्बन्धी सुधार की दिशा में जनसंचार को सभी क्षेत्रों का संतुलन बनाकर रखना हैंI हमे पता है की अधिकतर लोग शुद्ध एवं व्याकरणिक भाषा का प्रयोग सही उच्चारण करते हैं जिससे अनजाने लोगो से भी अधिक जानकारी प्राप्त होता हैI क्योंकि सम्प्रेषण एक संवाद हैं, संपर्क है पत्रिका से आदमी तक अपनी बात पहुंचने का प्रयास है जो सफलता पूर्वक रहना चाहिएI संचार माध्यम सम्प्रेषण का एक सशक्त माध्यम है I जनसंचार के माध्यम से अपनी माध्यम गत विशिष्टता के अनुसार सम्प्रेषण करते हैI आकाशवाणी, दूरदर्शन के जरिए जन - जन तक सुंदर और सुरीली आवाज़ का परिचय करके यहाँ तक कई लोग स्वर, लय और आवाज़, शैली में परिवर्तन लाए हैंI उच्चारण, भाषा एवं शब्द भंडार, शैली आदि को संचार साधनों तथा कार्यक्रम के जरिए सुधार एवं सक्ष्म बनाते हैं अपने कोI

संचार जगत में संतुलन और अंकुश का होना भी जरूरी हैI ऐसा न रहे तो वह अनियंत्रित हो जाएगाI लेकिन सही तरीकेसे विचारों के अभिव्यक्ति पर अंकुश लगाना ठीक नहीं हैं लेकिन उसे निरंकुश भी नहीं रहनाI विचारों को नियम, कानून, ओचित्य, मर्यादा, देशहित और समाजहित से जुड़ा होना चाहिएI अभिव्यक्ति की आज़ादी का अर्थ स्वेक्छाचारिता नहीं हैI आज इतना अधिक जानने की अदम्य इक्छा है उतनी ही जानकारी को छिपाने की भरपूर कोशिश भीI कानून, सें सोर्शिप, प्रसारण और वितरण में अड़चन, समाचारपत्र की अर्थव्यवस्था पर कठोराघात, इस सरकारी शास्त्रों से अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता बाधित होती हैंI इसमें भी गुणवत्ता सुढार लाने की आवश्यकता हैI

समाज में व्याप्त दोहरा जीवन दोहरी नीतियों आदि मान्यताओं को मिटाने की दिशा में जनसंचार साधनों को मोड़ना हैंI जानने का और बतलाने का अधिकार प्रभावकारी ढंग से संपर्क बनना एवं भ्रामक प्रचार प्रसारों को निरर्थक सिद्ध करने की कला जनसंचार साधन में लाने का प्रयास होना चाहिएI जनसंचार के शिक्षण में प्रजातान्त्रिक व्यवस्था को सम्मुन्नत करने की भूमिका को निभाने में नियंत्रण की गति होनी हैI

उचित समय पर सही जानकारी सत्कर्मियों के महत्व त्रुटियों के दुष्परिणामों से अवगत आम जनता की समस्याओं के निदान आदि उपचार की दिशा में जनसंचार का प्रभावशालीनता कड़ी आलोचना विरोध असहमति के प्रकाशन से रचनात्मक सुधार भ्रम विभ्रम अविश्वास कुतर्क आदि को मिटाने में अहम्भूमिका की आवश्यकता जनसंचार में होनी चाहिएI

iJournals

सन्दर्भ सूचि:

1. राष्ट्रीय नवजागरण और हिन्दीपत्रकारिता, कृष्णबिहारी मिश्र, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली.
2. पत्रकारिता के उत्तर.आधुनिक, कृपाशंकर चौबे, सरस्वती प्रकाशन, आगरा.
3. समकालीन पत्रकारिता, लेखक: राजकिशोरे, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली.
4. हिन्दी पत्राकारिता का वृहद्, लेखक: अर्जुन तिवारी, सरस्वती प्रकाशन,लखनऊ.

iJournals